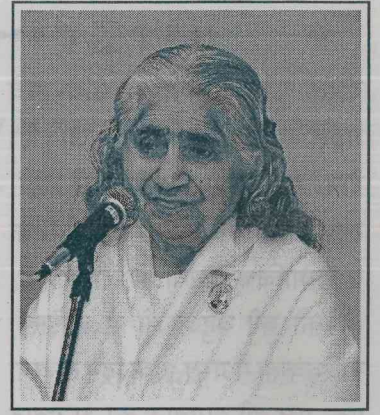


प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के



दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक

प्रश्न:- पुरुषार्थ में सफलता के लिए योग के साथ क्या मनन करना भी जरूरी है?

उत्तर:- योग हम क्यों लगा रहे हैं, पूछो अपने से? योग लगा रहे हैं दिव्य बुद्धि दाता के साथ। यदि बुद्धि मेरी दिव्य नहीं है तो योग क्या है, क्या मैंने योग को समझा? योग सिर्फ (थ्योरी रूप में) समझने के लिए नहीं है। परन्तु जिसकी हम संतान हैं, उसके साथ हमारे सर्व संबंध हैं। उन सर्व संबंधों की प्राप्ति मुझे योग में होनी चाहिए। सिर्फ शान्ति मुझे मिले, इसलिए योग नहीं लगा रही हूँ। शान्ति तो मेरा स्वधर्म है। अशान्त होने की आवश्यकता नहीं है। बाबा को कहेंगे, बाबा, मुझे शान्ति दो। बाबा कहेगा, बच्ची, शान्ति तो तुम्हारा स्वधर्म है। फिर प्रश्न है कि बाबा को क्यों याद करते हैं, तो इसके लिए बाबा कहते, बाप समान बनो। अंदर विदेही रहने की गुप्त प्रैक्टिस हो तो बाबा से सर्व संबंधों

की शक्ति मिलती है जिससे महसूस होता है, मैं विजयी बनती जा रही हूँ, सफलता मिलती जा रही है। ऐसे नहीं लगता, सफलता कब होगी, अभी तक विजय नज़र नहीं आ रही है। यदि विजय नज़र नहीं आती तो उसका सूक्ष्म कारण है, सर्व संबंधों की शक्ति अंदर जमा नहीं है और वो काम भी नहीं कर रही है। दूसरा, जो हमारी वृत्ति और दृष्टि है, ज्ञान के आधार से, उसकी चेकिंग की आवश्यकता है, तभी सफलता है। सूक्ष्म वृत्ति-दृष्टि से समझ लिया कि मैं मेहमान हूँ और महान आत्मा हूँ। शुरू-शुरू में जब कई बार छोटी-सी भूल भी करते थे तो बाबा कहता था, बच्चे, तुम योगयुक्त नहीं हो और हम सचमुच बाबा की इस शिक्षा को महसूस करते थे क्योंकि योगयुक्त माना युक्तियुक्त। योगयुक्त माना पहले ज्ञानयुक्त। बाबा से संबंध पूरा है तो हर बात में युक्तियुक्त होने चाहिए। हर बात के राज़ को पूरा

समझा हुआ होना चाहिए। मूँझने या घबराने वाला चेहरा हुआ माना राज़ को समझा नहीं है। योग माना बाबा से जो प्राप्ति या संबंध है, उसकी समझ और वह समझ काम में आए। पुरुषार्थ में सफलता का अर्थ है कि बाबा हमें साथ दे रहा है पर हम भी अटेन्शन से साथ ले रहे हैं। सूक्ष्म अभिमान को छोड़, देह के भान से परे रहकर अंदर की स्थिति हमें साथ दे रही है।

प्रश्न:- हम योगाभ्यास अच्छे-से करते हैं परन्तु फिर भी व्यवहार में आते कई वाते ऊपर-नीचे हो जाती हैं, बोल ऐसा निकल जाता है, तो क्या इसे योग में सफलता की कमी कहेंगे?

उत्तर:- अभिमान हमें स्वीट बनने नहीं देता। संबंध में आते दूसरे की कमी जो बहुतकाल से देखी है ना, हम उसे भुलाते नहीं हैं। उसी अनुसार व्यवहार करते हैं, यह हमारी कमी है। जैसे मैं कहूँगी, मैं 10 साल से या 5 साल से इनके साथ